शिक्षण विधि
संस्कृत
भाषा-शिक्षण
सिद्धान्ता:
- Sk Katariya
- Sk Katariya
Sky Educare
www.skyeducare.com

अधिक उन्नत PDF एवं समर्पित कोर्स के लिए –

SKY EDUCARE ऐप डाउनलोड करें / Download Mobile App
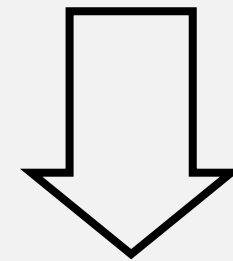
Download

संस्कृत-भाषा-शिक्षण-सिद्धान्ता:

- ✓ किसी भी भाषा शिक्षण के सफलता के लिए बनाए गए नियम जो भाषा शिक्षण के आधारस्वरूप होते हैं "भाषा शिक्षण के सामान्य सिद्धांत" कहलाते हैं।
- ✓ संस्कृत भाषा शिक्षण की विशेषताओं को ध्यान में रखकर उस की सफलता के लिए बनाए लिए नियम संस्कृत भाषा शिक्षण के सिद्धांत कहलाते हैं।
- ✓ भाषा शिक्षण सिद्धांतों का अनुसरण करके ही भाषा शिक्षण को सफल बनाया जा सकता है।

संस्कृत-भाषा-शिक्षण-सिद्धान्ता: -

इस PDF का Teaching वीडियो देखने के लिए यहां क्लिक करें

- ✓ स्वाभाविकताया: सिद्धांत:
- ✓ क्रियाशीलताया: सिद्धांत:
- ✓ मौखिककार्यस्य सिद्धांत:
- ✓ रुचे: सिद्धांत:
- ✓ अनुपातक्रमयो: सिद्धांत:
- ✓ व्यक्तिक भिन्नताया: सिद्धांत:
- ✓ समवाय सिद्धांत:
- ✓ उदेश्यचयनस्य विभाजनस्य च सिद्धांत:
- ✓ एकताया: सहभागिताया: च सिद्धांत:
- ✓ बहुमुखी सिद्धांत:
- ✓ भवनात्मक- अभिव्यक्ते: सिद्धांत:
- ✓ प्रयत्नस्य सिद्धांत:
- ✓ अनुकरण सिद्धांत:

↓ अनुकरणस्य

संस्कृतभाषाशिक्षण सिद्धान्ता:

- स्वाभाविकतायाः सिद्धांतः
- क्रियाशीलतायाः सिद्धांतः
- मौखिककार्यस्य सिद्धांतः
- रुचेः सिद्धांतः
- अनुपातक्रमयोः सिद्धांतः
- व्यक्तिक भिन्नतायाः सिद्धांतः
- समवाय सिद्धांतः
- उद्देश्यचयनस्य विभाजनस्य च सिद्धांतः
- एकतायाः सहभागितायाः च सिद्धांतः
- बहुमुखी सिद्धांतः
- भवनात्मक- अभिव्यक्तेः सिद्धांतः
- प्रयत्नस्य सिद्धांतः
- अनुकरण सिद्धांतः

प्रकृतिवादी / स्वाभाविकतायाः सिद्धांतः

स्वाभाविकता का अर्थ होता है किसी भी भाषा को बिना किसी दबाव के स्वाभाविक रूप से घर के वातावरण में सीखना। जब बालक घर में भाषा को सीखता है तो वह भाषा को स्वाभाविक रूप से सीखता है। अर्थात उस भाषा को बोलने वाले लोग उसके आसपास मौजूद होते हैं और वह उन सब की बातों को सुन सुनकर बिना किसी व्याकरण ज्ञान की सहजता से ही उस भाषा को सीख लेता है।

महत्वपूर्ण बिंदु - इस सिद्धांत के अंतर्गत भाषा स्वभाव से ही सीखी जाती है।

भाषा सीखने के लिए भाषा कौशलों के स्वाभाविक कर्म श्रवण भाषण पठन लेखन को अवश्य ध्यान में रखना चाहिए।

प्रारंभिक अवस्था में लिखित पक्ष की अपेक्षा मौखिक पक्ष (श्रवण एवं भाषण) पर अधिक बल देना चाहिए। अध्यापक संस्कृत भाषा में व्यवहार करें।

संस्कृत श्लोक एवं बाल गीतों का आयोजन हो। शुद्ध उच्चारण का अभ्यास कराएं।

इसमें बालक भय रहित एवं कृत्रिमता से रहित अधिगम करता है।

संस्कृतभाषाशिक्षण सिद्धान्ता:

- स्वाभाविकतायाः सिद्धांतः
- **क्रियाशीलतायाः सिद्धांतः**
- मौखिककार्यस्य सिद्धांतः
- रुचेः सिद्धांतः
- अनुपातक्रमयोः सिद्धांतः
- व्यक्तिक भिन्नतायाः सिद्धांतः
- समवाय सिद्धांतः
- उद्देश्यचयनस्य विभाजनस्य च सिद्धांतः
- एकतायाः सहभागितायाः च सिद्धांतः
- बहुमुखी सिद्धांतः
- भवनात्मक- अभिव्यक्तेः सिद्धांतः
- प्रयत्नस्य सिद्धांतः
- अनुकरण सिद्धांतः

- भाषा में दक्षता प्राप्त करने हेतु हमेशा **क्रियाशीलता, प्रयोग और अभ्यास** की आवश्यकता होती है आतः है क्रियाशीलता, प्रयोग और अभ्यास निरंतर जरुरी है।
- बालक करके सीखता है, अतः बार-बार कार्य को करवाना चाहिए।
- कठिन शब्दों एवं ध्वनियों के उच्चारण का अभ्यास कराना चाहिए।
- संस्कृत भाषा में विचार अभिव्यक्ति। संस्कृत को संस्कृत के माध्यम से पढ़ाना।
- संस्कृत अनुच्छेदों का गति, प्रवाह शुद्धता पूर्वक जोर-जोर से पढ़ाना।
- मौन वाचन अभ्यास हेतु पतंजलि के तीन बिंदुओं का अनुकरण करावाना – **1 रुचि 2 निरंतरता 3 वैराग्य**
- थार्नडाइक का प्रयत्न एवं त्रुटि का सिद्धांत एवं उसके प्रभाव के तीन नियम इसी सिद्धांत पर आधारित है।

संस्कृतभाषाशिक्षण सिद्धान्ता:

- स्वाभाविकतायाः सिद्धांत:
- क्रियाशीलतायाः सिद्धांत:
- **मौखिककार्यस्य सिद्धांत:**
- रुचेः सिद्धांत:
- अनुपातक्रमयोः सिद्धांत:
- व्यक्तिक भिन्नतायाः सिद्धांत:
- समवाय सिद्धांत:
- उद्देश्यचयनस्य विभाजनस्य च सिद्धांत:
- एकतायाः सहभागितायाः च सिद्धांत:
- बहुमुखी सिद्धांत:
- भवनात्मक- अभिव्यक्तेः सिद्धांत:
- प्रयत्नस्य सिद्धांत:
- अनुकरण सिद्धांत:

- भाषा **श्रवण** से प्रारंभ होती है उसके बाद में बालक उसे **बोलना** सीखता है उसके बाद में ही वह उसे **पढ़ता** है और उसके बाद में उसे **लिखता** है, सुनना और बोलना सबसे पहले होता है **अतः शिक्षण में सबसे पहले मौखिक कार्य करवाना चाहिए बाद में लिखित कार्य का अभ्यास करवाना चाहिए**
- संस्कृत शब्दावली एवं व्याकरण की विभिन्न रूप मौखिक रूप से सीखे जा सकते हैं। लिखित कार्य का आधार मौखिक अभिव्यक्ति है।
- सर्वप्रथम मौखिक तत्पश्चात लिखित कार्य करवाएं। इससे बालक सक्रिय रहता है। तथा ज्ञान चिरस्थाई रहता है।

संस्कृतभाषाशिक्षण सिद्धान्ता:

- स्वाभाविकताया: सिद्धांत:
- क्रियाशीलताया: सिद्धांत:
- मौखिककार्यस्य सिद्धांत:
- **रुचे: सिद्धांत:**
- अनुपातक्रमयो: सिद्धांत:
- व्यक्तिक भिन्नताया: सिद्धांत:
- समवाय सिद्धांत:
- उद्देश्यचयनस्य विभाजनस्य च सिद्धांत:
- एकताया: सहभागिताया: च सिद्धांत:
- बहुमुखी सिद्धांत:
- भवनात्मक- अभिव्यक्ते: सिद्धांत:
- प्रयत्नस्य सिद्धांत:
- अनुकरण सिद्धांत:

- जिस विषय में बालक की रुचि होती है, वह उस विषय को शीघ्रता से सीख लेता है।
- अत: इस हेतु शिक्षक दृश्य श्रव्य उपकरणों का प्रयोग करें।
-
- क्रीड़ा माध्यम से शब्द धातु रूप का ज्ञान कराएं, पूर्व ज्ञान को नवीन ज्ञान से जुड़े।
- पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन जैसे अंताक्षरी,वाद विवाद, भाषण, निबंध लेखन,सस्वर वाचन आदि का आयोजन करें।

संस्कृतभाषाशिक्षण सिद्धान्ताः

- स्वाभाविकतायाः सिद्धांतः
- क्रियाशीलतायाः सिद्धांतः
- मौखिककार्यस्य सिद्धांतः
- रुचेः सिद्धांतः
- **अनुपातक्रमयोः सिद्धांतः**
- व्यक्तिक भिन्नतायाः सिद्धांतः
- समवाय सिद्धांतः
- उद्देश्यचयनस्य विभाजनस्य च सिद्धांतः
- एकतायाः सहभागितायाः च सिद्धांतः
- बहुमुखी सिद्धांतः
- भवनात्मक- अभिव्यक्तेः सिद्धांतः
- प्रयत्नस्य सिद्धांतः
- अनुकरण सिद्धांतः

अनुपात का एक उद्देश्य ज्ञानात्मक, भावनात्मक एवं क्रियात्मक उद्देश्य के उचित अनुपात से है । अर्थात भाषा शिक्षण के समस्त उद्देश्यों को उचित मात्रा में पूरा किया जाए तथा भाषा के समस्त पक्षों की ओर ठीक ध्यान देते हुए प्रत्येक अंग पर अभीष्ट बल दिया जाए।

प्राथमिक स्तर पर मौखिक कार्य, माध्यमिक स्तर पर पाठ्यपुस्तक आधारित व्याकरण ज्ञान, उच्च स्तर पर अनुवाद रचना आदि।

- स्वाभाविकतायाः सिद्धांतः
- क्रियाशीलतायाः सिद्धांतः
- मौखिककार्यस्य सिद्धांतः
- रुचेः सिद्धांतः
- अनुपातक्रमयोः सिद्धांतः
- **व्यक्तिक भिन्नतायाः सिद्धांतः**
- समवाय सिद्धांतः
- उद्देश्यचयनस्य विभाजनस्य च सिद्धांतः
- एकतायाः सहभागितायाः च सिद्धांतः
- बहुमुखी सिद्धांतः
- भवनात्मक- अभिव्यक्तेः सिद्धांतः
- प्रयत्नस्य सिद्धांतः
- अनुकरण सिद्धांतः

प्रत्येक छात्र बौद्धिक एवं शारीरिक रूप से भिन्न होता है जैसे कुछ **कुशाग्र, कुछ सामान्य, कुछ मंदबुद्धि होते हैं।**

अतः **व्यक्तिगत क्षमता के अनुसार की भाषा शिक्षण किया जाना चाहिए।** अलग-अलग छात्रों के अनुसार अपने शिक्षण का स्तर रखना।

- स्वाभाविकताया: सिद्धांत:
- क्रियाशीलताया: सिद्धांत:
- मौखिककार्यस्य सिद्धांत:
- रुचे: सिद्धांत:
- अनुपातक्रमयो: सिद्धांत:
- व्यक्तिक भिन्नताया: सिद्धांत:
- **समवाय सिद्धांत:**
- उद्देश्यचयनस्य विभाजनस्य च सिद्धांत:
- एकताया: सहभागिताया: च सिद्धांत:
- बहुमुखी सिद्धांत:
- भवनात्मक- अभिव्यक्ते: सिद्धांत:
- प्रयत्नस्य सिद्धांत:
- अनुकरण सिद्धांत:

शिक्षण को रुचिपूर्ण बनाने के लिए कक्षा के स्तर अनुसार विभिन्न सिद्धांतों के सकारात्मक पक्षों का प्रयोग एक साथ करना समवाय सिद्धांत कहलाता है।

संस्कृतभाषाशिक्षण सिद्धान्ताः

- स्वाभाविकतायाः सिद्धांतः
- क्रियाशीलतायाः सिद्धांतः
- मौखिककार्यस्य सिद्धांतः
- रुचेः सिद्धांतः
- अनुपातक्रमयोः सिद्धांतः
- व्यक्तिक भिन्नतायाः सिद्धांतः
- समवाय सिद्धांतः
- **उद्देश्यचयनस्य विभाजनस्य च सिद्धांतः**
- एकतायाः सहभागितायाः च सिद्धांतः
- बहुमुखी सिद्धांतः
- भवनात्मक- अभिव्यक्तेः सिद्धांतः
- प्रयत्नस्य सिद्धांतः
- अनुकरण सिद्धांतः

पुस्तक के पाठों को पढ़ाने हेतु पाठो का चयन पर्व, उत्साह, मुख्य दिवस, ऋतु, आदि के आधार पर करना।

जैसे कि स्वतंत्रता दिवस पाठ को 15 अगस्त के आसपास पढ़ाना, होली, दीपोत्सव इत्यादि पाठो को इन त्योहारों के आसपास पढ़ाना आदि।

ऐसा करने से छात्रों को इन विशेष दिवसों का ज्ञान अच्छी प्रकार से प्रत्येक तरीके से हो जाता है।

संस्कृतभाषाशिक्षण सिद्धान्ता:

- स्वाभाविकतायाः सिद्धांतः
- क्रियाशीलतायाः सिद्धांतः
- मौखिककार्यस्य सिद्धांतः
- रुचेः सिद्धांतः
- अनुपातक्रमयोः सिद्धांतः
- व्यक्तिक भिन्नतायाः सिद्धांतः
- समवाय सिद्धांतः
- उद्देश्यचयनस्य विभाजनस्य च सिद्धांतः
- **एकतायाः सहभागितायाः च सिद्धांतः**
- बहुमुखी सिद्धांतः
- भवनात्मक- अभिव्यक्तेः सिद्धांतः
- प्रयत्नस्य सिद्धांतः
- अनुकरण सिद्धांतः

शिक्षण के समय सभी प्रकार के बालकों की सहभागिता होनी चाहिए यह कार्य **शिक्षण के साथ-साथ विविध सह शैक्षणिक गतिविधियों** में छात्रों की सहभागिता बढ़ाकर किया जा सकता है। समवेत स्तर में श्लोकों एवं बालगीतों का वाचन, अंताक्षरी वाद-विवाद भाषण निबंध लेखन सस्वर वाचन, संभाषण शिविरों का आयोजन आदि पाठ्य सहगामी क्रियाओं से संस्कृत शिक्षण रुचिकर होता है।

इस PDF का Teaching वीडियो देखने के लिए यहां क्लिक करें

संस्कृतभाषाशिक्षण सिद्धान्ता:

- स्वाभाविकताया: सिद्धांत:
- क्रियाशीलताया: सिद्धांत:
- मौखिककार्यस्य सिद्धांत:
- रुचे: सिद्धांत:
- अनुपातक्रमयो: सिद्धांत:
- व्यक्तिक भिन्नताया: सिद्धांत:
- समवाय सिद्धांत:
- उद्देश्यचयनस्य विभाजनस्य च सिद्धांत:
- एकताया: सहभागिताया: च सिद्धांत:
- **बहुमुखी सिद्धांत:**
- भवनात्मक- अभिव्यक्ते: सिद्धांत:
- प्रयन्नस्य सिद्धांत:
- अनुकरण सिद्धांत:

एक उद्देश्य की प्राप्ति करने के लिए अनेक प्रकार के प्रयास किए जाने चाहिए अर्थात संबंधित सभी विषयों पर ध्यान देना चाहिए अर्थात बहुविध प्रयन्न करना चाहिए।

- स्वाभाविकतायाः सिद्धांतः
- क्रियाशीलतायाः सिद्धांतः
- मौखिककार्यस्य सिद्धांतः
- रुचेः सिद्धांतः
- अनुपातक्रमयोः सिद्धांतः
- व्यक्तिक भिन्नतायाः सिद्धांतः
- समवाय सिद्धांतः
- उद्देश्यचयनस्य विभाजनस्य च सिद्धांतः
- एकतायाः सहभागितायाः च सिद्धांतः
- बहुमुखी सिद्धांतः
- **भवनात्मक-अभिव्यक्तेः सिद्धांतः**
- प्रयत्नस्य सिद्धांतः
- अनुकरण सिद्धांतः

शिक्षण के समय छात्रों को भावनाओं की अभिव्यक्ति की पूर्ण स्वतंत्रता होनी चाहिए जिससे बालक अधिक जुड़ाव के साथ शिक्षण में भाग ले सकें।

- स्वाभाविकतायाः सिद्धांतः
- क्रियाशीलतायाः सिद्धांतः
- मौखिककार्यस्य सिद्धांतः
- रुचेः सिद्धांतः
- अनुपातक्रमयोः सिद्धांतः
- व्यक्तिक भिन्नतायाः सिद्धांतः
- समवाय सिद्धांतः
- उद्देश्यचयनस्य विभाजनस्य च सिद्धांतः
- एकतायाः सहभागितायाः च सिद्धांतः
- बहुमुखी सिद्धांतः
- भवनात्मक-अभिव्यक्तेः सिद्धांतः
- **प्रयत्नस्य सिद्धांतः**
- अनुकरण सिद्धांतः

भाषा के ज्ञान के लिए अधिक से अधिक प्रयत्न करने चाहिए। वर्णन शब्द वाक्य आदि के ज्ञान में श्रुतलेखन, वाक्य रचना, वाचन आदि में प्रयत्न कर दक्षता प्राप्त करनी चाहिए।

संस्कृतभाषाशिक्षण सिद्धान्ता:

- स्वाभाविकतायाः सिद्धांतः
- क्रियाशीलतायाः सिद्धांतः
- मौखिककार्यस्य सिद्धांतः
- रुचेः सिद्धांतः
- अनुपातक्रमयोः सिद्धांतः
- व्यक्तिक भिन्नतायाः सिद्धांतः
- समवाय सिद्धांतः
- उद्देश्यचयनस्य विभाजनस्य च सिद्धांतः
- एकतायाः सहभागितायाः च सिद्धांतः
- बहुमुखी सिद्धांतः
- भवनात्मक-अभिव्यक्तेः सिद्धांतः
- प्रयत्नस्य सिद्धांतः
- **अनुकरणस्य सिद्धांतः**

- बच्चे अनुकरण के द्वारा जल्दी सीखते हैं, बच्चे अपने शिक्षक के जैसे बोलने, शिक्षक के जैसे लिखने और उनके स्वर एवं गीत आदि का अनुकरण करके वैसे ही सीखने का प्रयास करते हैं।
- अतः शिक्षकों को स्वयं अपने उच्चारण स्वर बोलने की गति, लेखन आदि को शुद्ध स्वच्छ रखने का ध्यान रखना चाहिए जिससे छात्र भी उनका अनुकरण करके शुद्ध स्वच्छ और ठीक स्वर एवं गति से पढ़ना लिखना सीख सकें।
- बालक को शिक्षण के समय अधिक से अधिक अनुकरण के अवसर देने चाहिए और उनकी त्रुटियों का संशोधन करना चाहिए। इसे संशोधन सिद्धांत भी कहते हैं।

- Sk Katariya